Dr. Harendra Kr. Singh
M.A., Ph.D.
Principal
K.B. Jha College, Katihar
A Constituent unit of Purnea University Purnia

Mob. : 9835433927, 8986954355
E-mail : harendrasingh716@gmail.com

Ref. No. .....

Date.....

शोध प्रबंध मूल्यांकन रिपोर्ट

शोधार्थी- प्रभात कुमार सिंह

विषय - इतिहास

संकाय- सामाजिक विज्ञान

शोध प्रबंध का शीर्षक – "स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पूर्णिया जिला का सामाजिक तथा आर्थिक जीवन का अध्ययन 1947 से 2020"

शोधार्थी प्रभात कुमार सिंह के द्वारा इस शोध प्रबंध में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पूर्णिया जिला का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के अध्ययन को 1947 से 2020 की समय अवधि में विस्तृत रूप से बताने का बेहतर प्रयास किया गया। इस शोध पत्र में शोधकर्ता के द्वारा शोध के प्रकरण, शोध की विधि, शोध की परिकल्पना, शोध की समस्या शोध के साहित्य तथा शोध के उद्देश्यों को विस्तृत एवं सकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

शोधकर्ता के द्वारा इस शोध प्रबंध को 6 अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। जो अत्यंत प्रासंगिक है। शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में संपूर्ण शोध प्रबंध का परिचय, द्वितीय अध्याय में पूर्णिया जिला का भौगोलिक परिचय, तृतीय अध्याय में ऐतिहासिक परिचय, चतुर्थ अध्याय में सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन का परिचय, पंचम अध्याय में आर्थिक परिचय तथा अंतिम अध्याय में उपसंहार को शामिल कर अपने संपूर्ण शोध कार्य को उत्तम एवं प्रासंगिक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध प्रबंध में शोधकर्ता के द्वारा संपूर्ण शोध कार्य को सरल भाषा में वाक्य विन्यास की सभी कसौटियों पर उतारने का प्रयास किया गया है। शोधकर्ता ने शोध कार्य हेतु तथ्यों का संग्रहण भली भांति किया है, जिसमें प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों को प्राथमिकता के साथ शामिल किया है।

अनुमोदन : संपूर्ण शोध प्रबंध के जांच के उपरांत मैं अनुमोदित करता हूं कि शोधार्थी प्रभात कुमार सिंह को मौखिकी के उपरांत पी-एच० डी० की उपाधि प्रदान की जाय।

हरेन्द्र कुमार सिंह
03/04/2024.

Dr. Harendra Kr. Singh
Associate Professor
(Dept. of History)
K.B. Jha College, Katihar

दिवाकर लाल श्रीवास्तव
(अवकाश प्राप्त)
पूर्व अध्यक्ष इतिहास विभाग
निदेशक, बौद्ध अध्ययन केन्द्र एवं समन्वयक
दीनदयाल उपाध्याय शोध पीठ
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

आवास : ए–42 वी.डी.ए. कालोनी
बड़ालालपुर, चांदमारी
वाराणसी–221003
मो. 9415446202
Email : diwakarhistory@gmail.com

शोधप्रबन्ध मूल्यांकन रिपोर्ट

शोधछात्र — श्री प्रभात कुमार सिंह

विश्वविद्यालय — पूर्णिया विश्वविद्यालय पूर्णिया, बिहार

विषय — इतिहास

संकाय — समाज विज्ञान संकाय

शोधकार्यशीर्षक — 'स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पूर्णिया जिला का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन'

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध का मैंने अध्ययन किया। शोध प्रबन्ध अध्यायवार — परिचय, जिले का भौगोलिक परिचय, ऐतिहासिक परिचय, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन का परिचय, आर्थिक परिचय एवं उपसंहार में विभक्त कर पूर्ण किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध कर्ता ने पूर्णिया जिले की प्राचीनता की स्थिति का परिचय देते हुए विभिन्न समय में उसके उल्लेख का विवरण दिया है। विभिन्न काल की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का विवरण शोधप्रबन्ध में दिया गया है। पूर्ववर्ती काल के पूर्णिया जिले का गठन एवं राजनीतिक परिस्थितियों का भी वर्णन शोध प्रबन्ध में किया गया है। क्षेत्र के उद्योग धन्धे, पारम्परिक व्यवसाय तथा मिट्टी का विवरण देते हुए शोधकर्ता ने भौगोलिक परिस्थितियों का विस्तार से चर्चा की है। विभिन्न ग्रन्थ स्रोतों के ग्रन्थों से गृहीत तथ्यों का शोधप्रबन्ध में पर्याप्त उपयोग है। तथ्यों की व्याख्या शोध पद्धति के मानक के अनुरूप है। भाषा शैली एवं सारगर्भित है। शोध कार्य उपयोगी एवं पी-एच.डी. उपाधि प्रदान करने के योग्य है। मौखिकी के उपरान्त पी-एच.डी. उपाधि दिया जाना उचित होगा। अतः संस्तुत किया जाता है कि श्री प्रभात कुमार सिंह को पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की जाय।

दिवाकर 15-03-24

175

(Dr.) Ashok Kumar Sinha
Professor & Head
University Department of History
Bhagalpur University, Bhagalpur-812 007

RESIDENCE :
307, Sundaram Apartment,
Tilkamanjhi, Bhagalpur (Bihar)
9431001924, 9931299878
ashoksinhabgp@gmail.com

Ref. No. Exam/Conf/PRNU/838/24

Date : 03/02/2024

शोधार्थी **प्रभात कुमार सिंह** के शोध प्रबंध **"स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पूर्णियाँ ज़िला का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का अध्ययन "** (शोध निर्देशक डॉ0 हरेन्द्र कुमार सिंह) के जाँचोपरांत विस्तृत रिर्पोट देते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

यह शोध प्रबंध छः अध्यायों में वर्गीकृत है। इस शोध प्रबंध में क्रमशः निम्न बिन्दुओं की जाँच की गयी है :–

शोध–प्रकरण : प्रासंगिक एवं संतोषजनक।

शोधार्थी द्वारा चयनित शोध–प्रकरण शोध हेतु प्रासंगिक है।

शोध–समस्या : उत्तम।

शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित शोध प्रबंध में जिन शोध समस्याओं पर विचार किया गया है, वे शोध–प्रकरण के अनुकूल एवं प्रासंगिक है।

शोध–प्रविधि : शोध छात्र ने शोध हेतु ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक शोध विधि को प्रयोग में लाया है। यह विधि शोध–प्रकरण के अनुकूल है।

परिकल्पना : उत्तम एवं प्रासंगिक ।

परिकल्पना किसी भी शोध में तथ्यों की पुष्टि का आधार है। जो शोध को निष्कर्ष तक पहुँचाती है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रयुक्त परिकल्पना उत्तम एवं प्रासंगिक है। साथ ही यह निष्कर्षों को वैध बनाती है। परिकल्पना की जाँच भी शोधार्थी द्वारा वैध तरीके से की गई है।

प्रदत्त -- **विश्लेषण** : शोधार्थी ने शोध हेतु तथ्यों का संग्रह भली–भांति अच्छी तरह से किया है। तत्पश्चात् परिकल्पना के माध्यम से तथ्यों की पुष्टि करने का प्रयास किया है। साथ ही साथ तथ्यों का विश्लेषण भी उत्तम रीति से किया है।

शोध–साहित्य : शोधार्थी ने शोध कार्य हेतु सर्वश्रेष्ठ साहित्य का चयन किया है। इन्होंने अधिकांश मूल ग्रंथों का अध्ययन किया है, यद्वपि शोधार्थी ने द्वितीयक स्त्रोत साहित्य का भी प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोध की समस्या को क्रमशः छः अध्यायों में वर्गीकृत कर विचार किया गया है। शोध की मुख्य समस्या स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पूर्णियाँ जिला का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का अध्ययन का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। इस क्रम में शोधार्थी ने विभिन्न परिकल्पनाओं की जांच एवं पुष्टि के उपरांत पाया कि समग्र 'सीमांचल' का क्षेत्र प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक महत्व का रहा है तथा ऐतिहासिक गतिशीलता में अहम भूमिका निभाई है। यह प्राचीन विदेह का भाग था। जिसे डॉ० एस० सी० राय चौधरी ने महाभारत में वर्णित जलोद्भव माना है। परन्तु प्रो० एस० एस० पाण्डेय ने इस वर्णित क्षेत्र को सीमांचल के उपरोक्त 7 जिलों के अतिरिक्त दरभंगा जिले का पूर्वी भाग माना है। इसे सही माना जा सकता है। पूर्णिया जिला बिहार के सबसे पुराने जिलों में से एक है और इसकी स्थापना 14 फरवरी 1770 को हुई थी। ये वो जमाना था जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने पलासी (1757) और बक्सर(1764) की लड़ाई में बंगाल के नवाब, मुगल बादशाह और अवध के नवाब को पराजित कर दिया था और मुगल सम्राट से बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी अपने नाम करा ली थी।

पुराने पूर्णिया जिले में आज के पूर्णिया, अररिया, कटिहार और किशनगंज जिले तो थे ही, साथ ही बंगाल में दार्जिलिंग तक का इलाका था। पूर्णिया का नाम पूर्णिया कैसे पड़ा इसके पीछे कई तरह की किंवदंतियां हैं लेकिन वैज्ञानिक प्रमाण किसी का उपलब्ध नहीं है। मुगल बादशाह अकबर के समय भारत में जो पहला आधुनिक सर्वे टोडरमल के द्वारा हुआ था (संभवतः 1601) उसमें पुरैनिया शब्द का जिक्र है। यानी पुरैनिया का नामकरण आज से करीब 400 साल पहले हो चुका था। आज के पूर्णिया में अनेक दृष्टि से परिवर्त्तन आया। समाज,

धर्म, रहन–सहन, वाणिज्य– व्यापार, शिक्षा इत्यादि ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां परम्पराओं का प्रभाव ना पड़ा हो। निःसंदेह कुछ प्रभाव पूर्णिया की अपनी मूल संस्कृति पर अहितकर सिद्द हुए, किन्तु आम तौर पर इसके अच्छे प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। वहीं इसने समग्र 'सीमांचल' की कला एवं संस्कृति को भी प्रभावित किया और मिश्रित संस्कृति ने जन्म लिया, जो कमोवेश आज थोड़े बहुत परिवर्त्तन के साथ मौजूद है।

प्रस्तुत शोध का पहला अध्याय परिचय है। शोधार्थी ने प्राचीन एवं मध्यकालीन पूर्णिया जिले के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को उजागर करने एवं उसकी स्थापना पर ध्यान केन्द्रित किया है।

शोध–प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय जिले का भौगोलिक परिचय की स्थिति पर आधारित है। इस अध्याय में क्षेत्र का विकास उसके आर्थिक परिवेश पर निर्भर है, जिसका सीधा सम्बन्ध प्रति व्यक्ति, अधिक उत्पादकता से है , की स्थिति की चर्चा शोधार्थी ने की है।

शोधार्थी ने शोध–प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में ऐतिहासिक परिचय पर ध्यान केन्द्रित किया है।

शोध–प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन का परिचय को रेखांकित करता है।

शोध–प्रबन्ध का पंचम अध्याय आर्थिक परिचय पर आधारित है। इस अध्याय में शोधार्थी ने मुख्यतः आर्थिक पहलू को चित्रित करने का भरसक प्रयास किया है।

शोध–प्रबन्ध का षष्टम् अध्याय 'उपसंहार' के रूप में है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि शोध छात्र, शोध समस्याओं का समाधान ढूंढने में सफल है। इनके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ, वैध एवं विश्वसनीय है। इनके निष्कर्षों को सामान्यीकरण किया जा सकता है।

शोध की भाषा : शोधार्थी के शोध प्रबंध की भाषा एवं वाक्य विन्यास लेखनशैली की कसौटियों पर खरा उतरता है। शोधार्थी के शोध की भाषा सरल, सुस्पष्ट एवं लाभात्मक है। यद्दपि टंकन

अशुद्धि पर ध्यान देने की आवश्यकता है। संदर्भ ग्रंथ सूची शोधार्थी के शोध की क्षमता का द्योतक है।

अनुमोदन : शोध प्रबंध के जांचोपरांत, मैं अनुमोदित करता हूँ कि शोध छात्र **प्रभात कुमार सिंह** को 'मौखिकी' के उपरांत **पी–एच०डी०** की उपाधि दी जा सकती है।

08/04/2024

प्रो० (डॉ०) अशोक कुमार सिन्हा
विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर 812007 (बिहार)